Volume : 1 | Issue : 4 | Sep 2012 • ISSN No 2277 - 8160

Research Paper | Mass Communication

मीडिया और सामाजिक बदलाव
(Media Aur Samajik Badalav)

Pardeep Singh Balhara
Ph.D. Research Scholar, Department of Journalism and Mass communication
Singhania University, Pacheri Bari, Distt.-Jhujhunu, Rajasthan

ABSTRACT

रू मीडिया की शुरूआत आजादी के पहले तक जितनी सराहनीय थी आज उतनी ही आलोचनात्मक बन चुकी है। क्रिकेट, क्राइम, सिनेमा और सेक्स के भंवरजाल में फंसी आज की मीडिया की दशा और दिशा पर अब विचार करने का समय आ गया है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि 20 वीं शताब्दी में दुनिया भर के पत्रकारों ने अपने जुझारूपन के चलते प्रजातंत्र की स्थापना को लेकर जो मुहिम चलाई थी। उसके बलबूते पर ही आज दुनिया में 120 देश, प्रजातांत्रिक हवा में सांस ले रहे हैं। हमें यह कतई नहीं समझना चाहिए कि मीडिया के हाईटेक होने से उसकी गुणवत्ता में बहुत सुधार आ गया हो। आज विजुअल मीडिया और इंटरनेट छोटी-छोटी बच्चियों के अश्लील दृश्यों को फिल्माकर पोर्नोग्राफी के बाजार के जरिए रोजगार के नए अवसर मुहैया करा रहा है। जिसके चलते इस मीडिया का उपयोग करने वाले लोग मानसिक विक्षिप्तता का शिकार हो रहे हैं। दरअसल ये आत्मघाती पथ है जिस पर मीडिया हमें ले जा रहा है। आज लाखों किसान आत्महत्या का रास्ता अपनाने को मजबूर हो रहे हैं। दूसरी तरफ मीडिया लगभग चुपचाप खड़ा है, शायद इसलिए कि वहां उनका चैनल नहीं जाता है। हर पत्रकार को खेत और किसान की आवाज बनकर आगे आना होगा।

KEYWORDS:

प्रस्तावना

मीडिया और समाज का संबंध बहुत पुराना है। जितना पुराना समाज है, उतना ही पुराना है मीडिया। समाज में जो भी घटता है उसका मीडिया पर असर होता है। इसी तरह मीडिया जो करता है उसका भी समाज पर पुरा असर होता है। पहले मीडिया सामाजिक सरोकारों को लेकर चलता था, लेकिन अब अपने व्यापारिक सरोकारों का ध्यान रखता है।

अब समाज में क्या ठीक या गलत हो रहा है, उससे उसे कोई मतलब नहीं है। उसे सिर्फ मतलब है कि उका मुनाफा किससे ज्यादा होगा। अब सामाजिक सरोकार मीडिया में नगण्य होते जा रहे हैं। पहले मीडिया बच्चों में देशभक्ति की भावना को उजागर करता था, लेकिन अब वह उनकी नींव को खोखला करता जा रहा है।

विकास के सोपान

मीडिया में हर दिन नए-नए आयाम जुड़ते रहे हैं, लेकिन उसमें कोई खास बदलाव नहीं आया। जैसे शुरूआती समाज को प्राकृतिक घटनाओं या हलचलों ने उसे प्रभावित किया और उसने पानी में तैरते लट्ठे को देखकर उसका विकासित रूप यानि नाव तैयार की होगी, पत्थरों की रगड़ को देख उसने आग का उपयोग सीखा होगा, लुढ़कते हुए किसी गोल पत्थर को देख उसने अपने लिए रथ बना लिया होगा, शिकार करने के तरीकों को देख उसने भी भोजन प्राप्त करने की कला सीखी होगी। ये सब विकास के ऐसे शुरूआती सोपान हैं जिनसे हम अनुमान लगाते हैं कि नेचुरल मीडिया यानि उसने प्रकृति के संकेतों को समझकर स्वंय को कार्यकुशल बनाने की कला सीखी। इसी के बाद कबीलों में रहने का दौर शुरू हुआ, जिसमें लोंगों ने सामान्यतः नदियों के किनारों को अपना निवास बनाना शुरू किया। तत्कालीन समय में नदियां, वर्शा, सूरज, चांद, धरती, तारे और हवा को लोगों ने चमत्कारिक ढंग से देखा होगा जिसके कुछ अंश अभी भी मिलते हैं। प्राचीन भारत में ही जब नागार्जुन, आर्यभट्, वराहमिहिर, भारद्वाज सरीखे ज्ञानविदों ने प्रकृति के रहस्यों को खोलना शुरू किया तो लोगों के देखने और समझने के नजरिए में आवश्यक बदलाव आया। यही कारण था कि जब पूरा भारत सूर्य और धरती की गति और स्थिति के बारे में जान चुका था तब यूरोप में गैलिलियो को धरती सूर्य चारों और घूमती है कहने पर यूरोपियन धर्मगुरू उसे गुलैटिन पर चढ़ाने की बात कर रहे थे। स्वाभाविक भी था, जो जितना नया समाज था उसकी उलझनें भी उतनी ही नई थीं।

घर-घर तक पहुंचाया शांति मंत्र

भारत में नदियों के किनारे बसी इन वैदिक बस्तियों ने सबसे पहले अपनी जवाबदेही जाहिर करते हुए पर्यावरण को लेकर शांति मंत्र तैयार किया जिसे धर्म यानि कर्तव्य पालन की बात कहकर घर-घर तक पहुंचाया। जिसमें जल, अग्नि, पृथ्वी, प्रकृति, वायू और आकाश को कल्याणकारी बनाने के लिए यज्ञों का आयोजन शुरू हुआ जिससे कि पूरी प्रकृति को प्रदूषण मुक्त किया जा सके। इस सबके लिए उन्होंने अपनी-अपनी लोकभाषाओं में कहावतें भी गढ़ी। जैसे पानी को लेकर सब जगह अपनी-अपनी लोकभाषाओं में भी ये कहावतें रूपांतरित कर लीं गई। जैसे ठहरे हुए जल और बहते हुए जल के महत्व को उन्होंने लगातार घूम-घूमकर अच्छी बातों का प्रसार करने वालों के लिए कहा कि हणहणबहता जोगी और रमता जोगी सदा निर्मल रहता है। मगर आज के पढ़े लिखे लोगों ने गंगा को रोककर गंदा करने की ठान ली है। दरअसल वे मुर्गी से सोने का अंडा लेने की बजाय मुर्गी को ही हलाल करने पर तुले हुए हैं। यह जरूरी है कि मीडिया पर मीडिया के ही लोगों की एक मॉनिटरिंग कमेटी हो जो उसकी सामाजिक जिम्मेदारी तय करे और उसे गलत रास्ते पर जाने से रोके, ये भी जरूरी है मीडिया को समाज पर हावी न होने दिया जाए वरन उसको समाज की आवष्यकताओं के हिसाब से दिशा दी जाए। जिससे नई पीढ़ी को समाज में व्याप्त भृष्टाचार, जात-पात, छुआछूत और मजहबी कट्टरपन बुराइयों से लोहा लेने लायक बनाया जा सके। ऐसा कहा जाता है कि 1962 से लेकर 1972 के बीच की सिविल सेवाओं में दाखिल हुए नौकरशाही कुछ ज्यादा ईमानदार और अपनी ड्यूटी को लेकर संजीदा निकले, इसका कारण भी मीडिया ही बताया जाता है। इन 10 सालों में भारत को लगातार 3 युद्धों का सामना करना पड़ा। मीडिया ने भी लगातार देश भक्ति की फिल्में, आकाशवाणी से लगातार देशभक्ति के गीत प्रसारित किए। बच्चों को किशोरावस्था से लेकर लगातार देशभक्ति की घुट्टी पिलाई गई जिसका कुछ असर उस समय के युवाओं में भी देखने को मिला। दरअसल हमें यह कतई नहीं समझना चाहिए कि मीडिया के हाईटेक होने से उसकी गुणवत्ता में बहुत सुधार आ गया हो। आज विजुअल मीडिया और इंटरनेट छोटी-छोटी बच्चियों के अश्लील दृश्यों को फिल्माकर पोर्नोग्राफी के बाजार के जरिए रोजगार के नए अवसर मुहैया करा रहा है। जिसके चलते इस मीडिया का उपयोग करने वाले लोग मानसिक विक्षिप्तता का शिकार हो रहे हैं। दरअसल ये आत्मघाती पथ है जिस पर मीडिया हमें ले जा रहा है। एक सर्वे के मुताबिक हाईटेक माध्यमों का इस्तेमाल करने वाले 80 फीसदी से ज्यादा युवक अश्लील फिल्में देखने के लिए इसका प्रयोग करते हैं।

पहले सराहना अब आलोचना

मीडिया की शुरूआत आजादी के पहले तक जितनी सराहनीय थी आज उतनी ही आलोचनात्मक बन चुकी है। क्रिकेट, क्राइम, सिनेमा और सेक्स के भंवरजाल में फंसी आज की मीडिया की दशा और दिशा पर अब विचार करने का समय आ गया है। अब हमें गांधी, तिलक, गणेश शंकर विद्यार्थी और दादा साहब आप्टे सैकड़ों पत्रकारों की विरासत को हमें यूं ही नहीं भुलाना चाहिए। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि 20 वीं शताब्दी में दुनिया भर के पत्रकारों ने अपने जुझारूपन के चलते प्रजातंत्र की स्थापना को लेकर जो मुहिम चलाई थी। उसके बलबूते पर ही आज दुनिया में 120 देश, प्रजातांत्रिक हवा में सांस ले रहे हैं।

कृषि और किसान संकट

मीडिया एक और जो खास सरोकार है वो है कृषि और किसान संकट, ये संकट केवल भारत का न होकर पूरी दुनिया का संकट है। आज दुनिया भर के किसानों से उनकी जमीनें छीनी जा रही हैं। जो बचे हैं उनके साथ भी ये षड्यंत्र जारी है। इसी के चलते अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किसानों से, उन्हें दी जा रहीं तमाम सुविधाओं को समाप्त करने की मुहिम चलाई जा रही हैं। दरअसल खेती को उद्योग की राह पर ले जाने वाले लालची धनपतियों से खेती को बचाना होगा। ग्रामीण विकास ही ऐसा मुद्दा है जिसके चलते लाखों किसान आत्महत्या का रास्ता अपनाने को मजबूर हो रहे हैं। दूसरी तरफ मीडिया लगभग चुपचाप खड़ा है, शायद इसलिए कि वहां उनका चैनल नहीं जाता है। आज हर तबके, चाहे सरकारी हो या पूंजीपति सभी के मन में किसान के प्रति करूणा पैदा करनी होगी। हर पत्रकार को खेत और किसान की आवाज बनकर आगे आना होगा। वर्तमान में संवाद का सशक्त माध्यम होने के बावजूद मीडिया संगठनों में कुछ खास संवाद नहीं है। मगर एक बार सभी मीडिया संगठनों को रणनीति के तहत एक मंच पर आकर किसान को मरने नहीं देने के साथ-साथ उनके विकास के लिए आगे आना होगा। अन्यथा वो दिन दूर नहीं जब ये लोग गांव-गांव से शहरों की ओर पलायन कर देश का इतिहास व भूगोल बदल देंगे और तब स्थिति और भी विस्फोटक हो जाएगी। इसके संकेत शहरों की लगातार बढ़ती आबादी के रूप में सामने आने शुरू हो चुके हैं।

निष्कर्ष

सच्चे अर्थो में 100 साल पहले तक एक भी प्रजातांत्रिक देश नहीं था। हम भारतवासी भी उन्हीं में से एक हैं। मगर हमें ये नहीं भूलना चाहिए कि एक अच्छे प्रजातंत्र की जिम्मेदारी उसकी प्रजा के कंधों पर ही होनी चाहिए। अर्थ है कि अब मीडिया का उपयोग प्रजातंत्र में उसकी जिम्मेदारियों का एहसास कराने की दिशा में होना चाहिए न कि उसके हक की लड़ाई लड़ने के लिए। यह जरूरी है कि वह आम आदमी को भ्रष्ट कानून और व्यवस्था से लड़ने की ताकत दे। वह विश्वास दिलाए कि वह हर उस आदमी की जंग में शामिल है जो भ्रष्टाचार से लड़ना चाहता है और अन्याय व अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाना चाहता है। मीडिया का सबसे अहम रोल सामाजिक और सांप्रदायिक सदभाव को कायम करना भी है ताकि लोग विविधता भरी इस दुनिया में एकात्मता का अहसास कर सकें। इसके लिए मीडिया को आधुनिक शंकराचार्य की भूमिका निभानी होगी।